ISSN - 2231-1130
वर्ष–षष्ठम् ; सितम्बर–2015

ग्रामीण रूपान्तरण की प्रक्रिया : एक समाजशास्त्रीय विवेचना

डॉ0 सत्या मिश्रा*

परिवर्तनकारी दीर्घकालीन प्रक्रियाओं के अन्तर्गत ग्रामीण सामाजिक संरचना ने आंतरिक तथा वाह्य आक्रमणों, विरोधाभासों तथा अन्तर्विरोधों को झेला है साथ ही तज्जनित नवीन प्रतिमानों को आत्मसात् भी किया है। फलतः गावों के परम्परागत स्वरूप में नवीन प्रवृत्तियाँ उदीयमान हो गई हैं और ग्रामीण समाज में व्यापक रूपान्तरण परिलक्षित हो रहें हैं।

समाजशास्त्र में ग्रामीण रूपान्तरण की विवेचना एक ऐतिहासिक प्रक्रिया के रूप में हुई है। योगेन्द्र सिंह ने भारत के सामाजिक जीवन में गांवों को निर्णायक संस्था मानते हुए इसे भारतीय समाज का सूक्ष्म–स्तरीय संरचनात्मक पक्ष की संज्ञा दी है (सिंह योगेन्द्र :2006,पृ0309)। गांव प्राचीन काल से ही भारतीय समाज का अभिन्न अंग रहे है। अनेक ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर इनके अस्तित्व को स्वीकार किया गया है। (दुबे,एस0सी0:2000,पृ0 9–10) भूस्वामित्व संम्बन्धी गहन सर्वेक्षणों के साथ–साथ ब्रिटिश प्रशासकों, मानव शास्त्रियों, अर्थशास्त्रों तथा समाजशास्त्रियों ने ग्रामीण समाज का आनुभविक अध्ययन किया । थॉमस मुनरो, चार्ल्स मेटेकाफ, हेनरी मेन, कार्ल मार्क्स तथा बेडेन पॉवेल इनमें से प्रमुख हैं। इनके द्वारा निष्पादित अध्ययनों में भारतीय गांवो को बंद तथा पृथक व्यवस्था की संज्ञा दी गई। चार्ल्स मेटकॉफ ने गावों को अखण्डित, परमाणु एवं अपरिवर्तनीय इकाई की संज्ञा दी है। उनके अनुसार ''ग्रामीण समुदाय लघु गणतंत्र हैं, उनमें उनकी आवश्यकतओं की लगभग सभी वस्तुएँ पाई जाती हैं और वे सभी विदेशी संबन्धों से लगभग स्वतंत्र हैं। युद्ध होते हैं, साम्राज्य बनते हैं और बिगड़ते हैं परन्तु गाँव समाज के रूप में अपरिवर्तनीय, स्थिर एवं स्वावलम्बी होकर उभरते हैं (शर्माः के0एल0, 2000)।

* सहायक प्रो0–समाजशास्त्र, नारी शिक्षा निकेतन, (पी0जी0 कॉलेज),लखनऊ।

18 वीं शताब्दी में किये गये उपर्युक्त अध्ययनों द्वारा प्रचारित मतों का आगे चलकर 1950 के आस–पास किये गये अध्ययनों में तीव्र खण्डन किया गया। दुबे ने अपने भारतीय ग्राम (1955) नामक अध्ययन की भूमिका में स्पष्ट रूप से उल्लिखित किया है कि हम भारतीय ग्राम समुदाय को थावर, समय–शून्य एवं परिवर्तन हीन नहीं मान सकते। समय तथा ऐतिहासिक एवं समाजशास्त्रीय शाक्तियों और कारकों की अन्तः क्रीड़ाओं ने इन समुदायों की संरचना, गठन एवं आचारतत्व को कई महत्वपूर्ण दिशाओं में प्रभावित किया है (दुबेः2000, पृ0–10)। इसी के समकालीन श्री निवास द्वारा संपादित पुस्तक ' भारतीय ग्राम' में संकलित अनेक शोध आलेख ग्रामीण रूपान्तरण पर केन्द्रित थे। 1958 में प्रकाशित डी0एन0मजूमदार की पुस्तक' कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंडियन विलेज, भी ग्रामीण रूपान्तरण की आंशिक व्याख्या करती है। दुबे की 'इंडियाज़ चेंजिग विलेज'(1958),मजूमदार की' छोर का एक गांव (1960) नामक अध्ययन नियोजित ग्रामीण रूपान्तरण की प्रक्रियाओं के परिणाम स्वरूप आ रहे प्रारम्भिक परिवर्तनों की व्याख्या करते हैं। एस0सी0दुबे ने 2001 में प्रकाशित अपनी पुस्तक ' भारतीय समाज' में न्यूनाधिक रूप से गावों में प्राचीन काल से आ रहें परिर्वननों पर दृष्टिपात किया है और इसका खण्डन किया है कि '' भारतीय ग्राम नन्हें गणतंत्र हैं।'' उनके अनुसार अतीत में भी उन्हे कम से कम कुछ चीजों के लिए बाहरी संसाधनों पर निर्भर रहना पड़ता था। उदाहरणार्थ प्रतिदिन के भोजन हेतु आवश्यक नमक की आपूर्ति घुमन्तू बाजारों द्वारा की जाती थी। चूड़ियाँ जो कि सुहागिन स्त्रियों का अनिवार्य श्रृगांर मानी जाती हैं, स्थानीय स्तर पर प्रत्येक स्थान पर नहीं बनायी जाती थीं। गांवों के बीच अनेक वस्तुओं के लिए व्यापार होता था। बाजार केंन्द्रों में अनेक गावों से लोग आते थे, केन्द्रीय स्थिति वाले गांवों में साप्ताहिक बाजार लगते थे। स्थानीय एवं क्षेत्रीय मेलों में बड़ी संख्या में लोग दूर–दूर से आते थे। लम्बी दूरी की तीर्थ यात्राएं प्रचलित थीं ग्राम–बर्हिविवाह प्रचलित थे। नातेदारी का संजाल विस्तृत था तथा अन्तर ग्राम पंचायतों की भी परमपरा थी।

ग्रामीण समाज के दीर्घकालीन समाज शास्त्रीय अध्ययनों द्वारा ग्रामीण रूपान्तरण के आर्थिक , राजनीतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्ष सामने आयें है। वस्तुतः ग्राम्य समाज के इन आयामों में परिवर्तनों का प्रवर्तन राज्य द्वारा किये गये संस्थागत प्रयासों से संभव हुआ है। भूमि सुधार कार्यक्रम, सामुदायिक विकास योजनायें, पचंवर्षीय योजनायें, हरितक्रान्ति, चुनावी सहभागिता अथवा सार्वभौम वयस्क मताधिकार, नियोजित ग्रामीण विकास कार्यक्रम, निर्धनता उन्मूलन कार्यक्रम, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन एवं पंचायती राज संस्थाओं की स्थापना एवं सशक्तीकरण (लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण) इत्यादि इनमें से प्रमुख प्रयास हैं। औद्योगीकरण, नगरीकरण, परिवहन के साधनों एवं सड़कों (राजमार्गों) का विकास, शिक्षा, प्रवसन एवं तीव्र भौगोलिक–सामाजिक गतिशीलता, संचार तथा सूचना प्रौद्योगिकी के विकास ने ग्रामीण रूपान्तरण की प्रक्रिया को और अधिक तीव्र किया है।

ग्रामीण रूपान्तरण की प्रक्रिया का अध्ययन करने हेतु ग्रामीण समाजशास्त्र में कतिपय अवधारणाओं का प्रयोग किया गया है। यथा–बृजराज चौहान ने ग्रामीण नगरीय अन्तर्क्रिया (Rural-Urban Articulation) के0एल0शर्मा एवं दीपांकर गुप्ता ने ग्रामीण–नगरीय गठजोड़ (Rural-Urban Nexus) तथा जी0एस0 घुर्ये ने ग्रामीण शहरीकरण (Rural-Urban Comunity) जैसी प्रक्रियाओं के द्वारा गावों में आ रहे सामाजिक सांस्कृतिक रूपान्तरण, विशेष तौर पर ग्रामीण–नगरीय सम्पर्कों के कारण आ रहे परिवर्तनों का अध्ययन किया है। नगरों में ग्रामीण व्यक्ति शिक्षा, रोजगार, व्यवसाय, बाजार, प्रशासनिक कार्यालयों एवं न्यायिक संस्थाओं में कार्य संपादन हेतु प्रवास करते हैं। यह प्रवास, भौगोलिक, सामाजिक एवं व्यवसायिक गतिशीलता को जन्म देता है। यह गतिशीलता प्रायः दो स्तरों पर घटित हुई है – प्रथम, ग्राम से नगर की और गतिशीलता और द्वितीय नगर से ग्राम की ओर गतिशीलता। ये प्रक्रियायें ग्रामीण समाज की सामाजिक–सांस्कृतिक संरचना में रूपान्तरण को जन्म देती हैं। बजराज चौहान ने रूपान्तरण हेतु ग्रामीण समाज की आन्तरिक प्रक्रियाओं के स्थान पर वाह्य

प्रक्रियाओं को महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार ग्रामीण समाज में परिवर्तन का एक प्रमुख सामाजिक–सांस्कृतिक कारक है– नागरिक समाज का हस्तक्षेप। ग्रामीण सामाजिक जीवन पर शिक्षा, परिवार नियोजन, स्वच्छता एवं स्वास्थ्य जैसे क्षेत्र में प्रयासरत ये नागरिक समाज गैर सरकारी अथवा स्वैच्छिक संगठन है। यद्यपि इस प्रकार के रूपान्तरण की गति मंद तथापि ग्रामीण परिवर्तनों में इनका महत्वपूर्ण अवदान है। रजनी कोठारी (1988) ने भारतीय समाज के रूपान्तरण में दो महत्वपूर्ण प्रक्रियाओं का उल्लेख किया है; एक, आधुनिकीकरण एवं दूसरा, क्रान्ति। इनमें से भारतीय ग्रामीण समाज के रूपान्तरण में आधुनिकीकरण की प्रक्रिया की भूमिका प्रमुख रही है। आधुनिकीकरण ने दीर्घ अवधि में संरचनात्मक रूपान्तरण को उत्पन्न किया है। इसके अतिरिक्त समाजशास्त्रियों ने पश्चिमीकरण, संस्कृतीकरण, स्थानीयकरण एवं सार्वभौमीकरण के माध्यम से भी भारत में ग्रामीण रूपान्तरण की प्रक्रिया का अध्ययन किया है। जी0एस0 घुर्ये (1963) ने ग्रामीण–शहरीकरण की प्रक्रिया द्वारा आ रहे रूपान्तरण का उल्लेख किया है। उनके अनुसार इस रूपान्तरण का कारण गांवों की स्थानीय आवश्यकतायें थीं जिनका विस्तार नगरों में हुआ। नगर गांवों की कृषि उत्पादों की खपत का केन्द्र थे जिससे इनका फैलाव नगरों में हुआ और महानगर अस्तित्व में आये लेकिन वर्तमान 21वीं शताब्दी के दूसरे दशक में संचार के साधनों (मोबाइल फोन, इंटरनेट, सोशल मीडिया, डी.टी.एच. के प्रयोग) एवं सूचना प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने 'विश्व गांव' जैसी परिकल्पनाओं को साकार रूप दिया है और नगरीय प्रक्रियाओं का विस्तार ही भीतरी ग्रामीण क्षेत्रों में तीव्रता से हो रहा है। साथ ही उदारीकरण वैश्वीकरण एवं निजीकरण जैसी महत् परम्पराओं का ग्रामीण लघु परम्परा में हस्तक्षेप हुआ है और ग्रामीण समाज 'ग्लोबल गांव' अथवा वैश्वीकृत समाज का सदस्य बनने की ओर अग्रसर है।

स्पष्ट है कि, ग्रामीण समुदाय की परम्परागत प्रकृति में व्यापक एवं बहुआयामी रूपान्तरण घटित हो रहा है। गांवों में अनेक ऐसी घटनायें घट

रही है जो पारम्परिक नहीं है। गांव अब विलगित नहीं रह गये हैं, वे भूमण्डलीय प्रक्रियाओं से परस्पर अन्तक्रियायें कर रहे हैं। रूपान्तरणकारी प्रक्रियाओं के चलते ग्रामीण समाज में निरन्तरता एवं परिवर्तन, परम्परा एवं आधुनिकता मिले–जुले रूप में विद्यमान है।

सन्दर्भ –

1. दुबे, श्यामाचरण, 2001, भारतीय समाज, (अनु0वंदना मिश्र), नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया।
2. दुबे, श्यामाचरण, 1996, भारतीय ग्राम, (अनु0 योगेशअटल), वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. दुबे, श्यामाचरण, 1975, इंडियाज़ चेंजिग विलेज, बॉम्बे, एलाईड पब्लिशर्स, प्रा0 लि0।
4. शर्मा, के0एल0, 2000, भारतीय समाज, एन0सी0ई0आर0टी0
5. सिंह, योगेन्द्र, 2006, भारतीय परम्परा का आधुनिकीकरण, (अनु0 अरविन्द कुमार अग्रवाल), रावत पब्लिकेशंस, जयपुर)।
6. सिंह, योगेन्द्र, 1999, भारत में सामाजिक परिवर्तनः संकट एवं समुत्थानपरकता, (अनु0 दीपक चौधरी), जवाहर पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
7. चौहान, बृजराज, 1990, रूरल–अरबन आर्टीकुलेशन, ए0सी0ब्रदर्स, इटावा।
8. चौहान, बृजराज, 1988, भारतीय ग्रामीण समाज, ए0सी0 ब्रदर्स, इटावा।
9. श्रीनिवास, एम0एन0, 2000, भारत के गांव, (अनु0–मधु बी0 जोशी), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. देसाई, ए0आर0, 1997, भारतीय ग्रामीण समाजशास्त्र, (अनु0 हरिकृष्ण रावत, रावत पब्लिकेशंस, जयपुर।
11. मजूमदार, डी.एन.ः 1958, कास्ट एण्ड कम्युनिकेशन इन एन इंडियन विलेज, एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।

12. मजूमदार, डी0एन0, 1960, छोर का एक गांव (अनु0 चन्द्र भाल त्रिपाठी) एशिया पब्लिशिंग हाउस, मुम्बई।

13. घुर्ये, जी0एस0, 1963, एनॉटमी ऑफ अ रूर–अरबन कम्युनिटी, बॉम्बे, पॉपुलर प्रकाशन।

14. कोठारी, रजनी, 1988, ट्रासफरमेशन एंड सरवाइवल : इन रिसर्च ऑफ ह्यूमन वर्ल्ड ऑर्डर, अजंता पब्लिकेशंस, नई दिल्ली।